B - 4
L - 16
Indian Society

भारत में धर्मनिरपेक्षता को सफल बनाने हेतु सुझाव

1- धर्मनिरपेक्षता के अर्थ एवं सन्दर्भ को स्पष्ट किया जाए।

2. धर्मनिरपेक्षता को एक विचारधारा के स्तर पर मजबूत बनाया जाए

3. आधुनिक शिक्षा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार-प्रचार किया जाए और इस दिशा में मीडिया, NGO एवं युवाओं की भूमिका को मजबूत बनाया जाए।

4. समानुपातिक विकास एवं सामाजिक न्याय के लक्ष्य को अधिक से अधिक प्राप्त किया जाए।

5. साम्प्रदायिक धार्मिक संगठन, साम्प्रदायिक राजनीतिक दल एवं साम्प्रदायिक व्यक्तियों के ऊपर कठोर प्रतिबंध लगाया जाए।

6- धार्मिक प्रचार के अधिकार को सीमित किया जाए।

संभावित प्रश्न
⇓
PDF

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

भारत में साम्प्रदायिकता

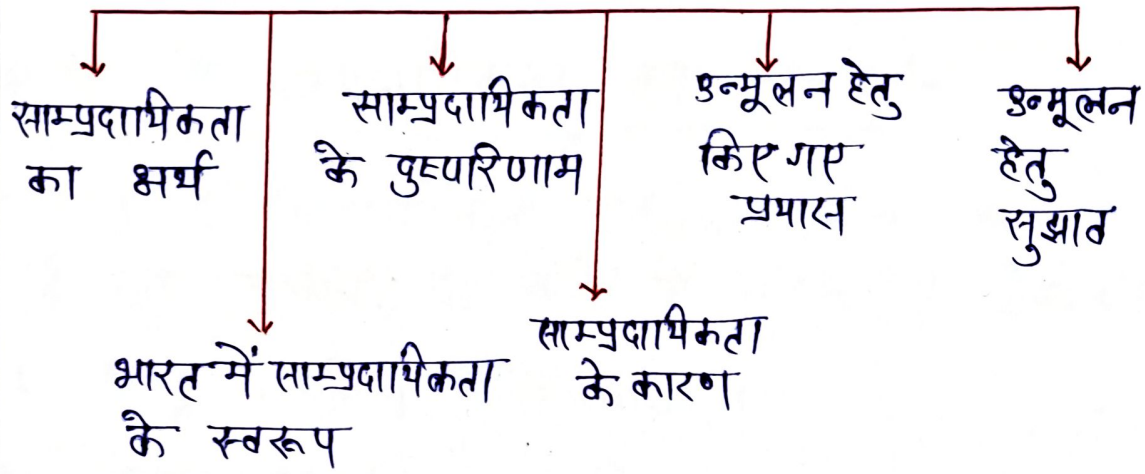

साम्प्रदायिकता का अर्थ :-

दो धार्मिक समुदाय का या एक ही धर्म के दो सम्प्रदायों के मध्य धार्मिक के सन्दर्भ में द्वेष, घृणा एवं परस्पर अविश्वास के मनोभाव को साम्प्रदायिकता की संज्ञा दी जाती है और इस प्रकार के मनोभाव से उत्पन्न संघर्ष को साम्प्रदायिक हिंसा या साम्प्रदायिक दंगा कहा जाता है।

साम्प्रदायिकता, धार्मिकता से भिन्न होती है और राजनीति से गहन रूप से जुड़ी हुई होती है-

क्योंकि एक साम्प्रदायिक व्यक्ति का अपने धर्म से अत्यधिक लगाव हो, यह आवश्यक नही है, परन्तु इससे उसके

राजनीतिक हितों की पूर्ति होती हो, यह आवश्यक है।

(B) भारत में साम्प्रदायिकता का स्वरूप :-

- भारत में साम्प्रदायिकता एक आधुनिक घटना है जो मुख्यतः दो रूपों में परिलक्षित होती है।

1. हिन्दू- मुस्लिम साम्प्रदायिकता
2. हिन्दू- ईसाई साम्प्रदायिकता

(C) भारत में साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम

आधुनिक घटना के रूप में साम्प्रदायिकता एक नकारात्मक मनोभाव को परिलक्षित करता है। जो आज भारत की एक प्रमुख समस्या के रूप में विद्यमान है क्योंकि इस घटना ने कई दुष्परिणामों को उत्पन्न किया है इन्हें निम्न बिन्दुओं के तहत देखा जा सकता है:

(i) विभिन्न धार्मिक समूहों के मध्य तनाव एवं संघर्ष में वृद्धि फलतः सामुदायिक सौहार्द्रता कमजोर हुई है।

(ii) राष्ट्रवाद की भावना कमजोर।